... Professor
C.M.J College, Donwari hat, Khutauna.

B.A. part I

Vedanta : Jagat

शंकर जगत को मानते जगत-मिथ्यात्व के सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हैं, अद्वैतवाद में ब्रह्म की एकमात्र सत्ता को स्वीकार करके जगत को मिथ्या कहा जाता है। हम शंकर के जगत मिथ्यात्व को अच्छी तरह समझने के लिए प्रश्न पर विचार करेंगे

1. मिथ्यात्व का क्या अर्थ है?
2. ~~जगत~~ जगत किस अर्थ में मिथ्या है।

मिथ्यात्व का अर्थ - अद्वैत वेदान्त में मिथ्यात्व शब्द को कई तरह से समझाया जाता है एक परिभाषा में जो सत और असत दोनों से विलक्षण है वह मिथ्या है तार्किक दृष्टि से सद्-असद् विलक्षण वस्तु अनिर्वचनीय होती है अद्वैत वेदान्त में सत और ~~असत~~ असत्य शब्द आत्यन्तिक अर्थों में प्रयुक्त होते हैं। सत वह है जो त्रिकालाबाधित है केवल वही पदार्थ सत है जो भूत, वर्तमान, भविष्यत तीनों कालों में बाधित न हो।

Scanned with CamScanner

जगत किस अर्थ में मिथ्या है ?

अद्वैत वेदान्त की दृष्टि में जगत की स्वतन्त्र एवं निरपेक्ष सत्ता नहीं है। जगत अपनी सत्ता के लिए पूर्णतया ब्रह्म पर आश्रित है मायायुक्त ब्रह्म या ईश्वर इस जगत के कारण हैं। ब्रह्म जगत का अभिन्ननिमित्तोपादान कारण है। माया ब्रह्म की शक्ति है। माया के कारण ही निर्गुण एवं भेदरहित ब्रह्म प्रपंचात्मक जगत के रूप में आभासित होता है यहां शंकर अद्वैत वेदान्ती के निमित्तोपादान कारणत्व की धारणा को अस्वीकार करते हैं।

शंकर के अनुसार जगत मायारूप है और यथार्थ नहीं है। शंकर अनन्यत्व के दार्शनिक सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए स्पष्ट करते हैं कि जगत ब्रह्म से अनन्य है। अतः दोनों के मध्य सम्बंध की बात करना अनुचित है। वास्तव में तात्त्विक दृष्टि से ब्रह्म एवं जगत एक हैं जिनमें प्रथम सत है और द्वितीय आभासमान है।